ISSN 2349-9273

The Gunjan

Multi Displinary Quarterly International Refereed Research Journal

Vol.- 5, Issue- 19, April - June, 2019

An International Refereed Research Journal of Humanities, Arts, Social Studies, Commerce and Science

Chief Editor :
Dr. Arun Kumar Dixit

Editor :
Dr. Ajai Saxena

दि गुंजन

वर्ष 5, अंक 19

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जर्नल)

वर्ष-5, अंक-19 - अप्रैल-जून, 2019

ISSN : 2349-9273

'मुन्नी मोबाइल' एवं 'आवा' उपन्यास में बाजारवाद की दुनियाँ में महिलाओं की स्थिति

– श्रीमती प्रिया गोसावी
सहायक प्राध्यापक एवं
विभागाध्यक्ष – हिन्दी विभाग,
विद्या प्रबोधिनी महाविद्यालय,
विद्या नगर, पर्वरी, गोवा–403501

ई–मेल :
priyagosavi28@gmail.com

सारांश

आधुनिक दुनिया में उपभोगों नारीवाद सर्वव्यापी इस बाजारवाद ने मनुष्य का इतना आकर्षित किया है कि वह अपने अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन सोशियल मीडिया पर करते हैं। नव पूँजीवाद के कारण जो नये किस्म का यथार्थ आया है, उसने समाज को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। बाजारवाद ने मनुष्य को लगातार संवेदनहीन बनाया है। नये अर्थ तंत्र के अन्तर्गत जिस तरह बाजारवाद ने देह व्यापार और अपराध जगत को बढ़ाया है, उसके उदाहरण के लिए प्रदीप सौरभ का 'मुन्नी मोबाइल' तथा चित्रा मुद्गल का 'आवां' उपन्यास उल्लेखनीय है। इन उपन्यासों में नई संवेदना के अन्तर्गत विविध रूपों को विश्लेषित किया है।

'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में पत्रकार आनन्द भारती एक प्रमुख पात्र है जो अपनी पैनी, निर्भीक और खोजी कलम से देश समाज में घटित घटनाओं को शब्दबद्ध करता है। उपन्यास के केंद्र में मुन्नी मोबाइल की कथा है, जो आनन्द भारती के यहाँ झाड़ू-पोंछा करती है और जिसे आनन्द भारती हस्ताक्षर करना सिखलाता है। मुन्नी मोबाइल का असली नाम बिंदू यादव है जो बिहार के बक्सर जिसे ले आकर दिल्ली के समीपवर्तीय नगर के गाँव में रहती है। पहले झोपड़ी में रहने वाली मुन्नी जमीन खरीदकर मकान बनाती है और अपने छह बच्चों के साथ मजदूर पति को पालती-पोसती है। लेकिन बाजारवाद के मोह में पड़कर वह गैरकानूनी धंधे शुरू करती है और इसी प्रतिस्पर्धा के कारण उसकी अन्त में हत्या कर दी जाती है।

आज भूमण्डलीकरण के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सारा विश्व बाजार के रूप में परिवर्तित हो गया है। बाजारवाद का प्रभाव साहित्य, समाज, सिनेमा आदि प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। उपभोक्तावाद को भूमंडलीकरण के कारण निश्चय ही बढ़ावा मिल रहा है। पूँजीवाद में उपभोक्ता वस्तुओं का अनियत्रिंत उत्पादन होता है। इस क्रूरभोग वृत्ति का प्राथमिक शिकार स्त्रियाँ बन चुकी है। स्त्रियों को एक वस्तु उपभोग की तरह देखा जाता है और उसकी बाजार में बोली लगाई जाती है। कई स्त्रियाँ न चाहते हुए इस स्त्री प्रवृत्ति बाजारवाद का शिकार बनती है तथा तकनीकी के उन्नति के कारण भारत में जिस गर्भ को पवित्र माना जाता है उस गर्भ की भी बाजार में कीमत लगाई जाती है। इस बाजारवाद ने मनुष्य को इतना आकर्षित किया है कि वह अपने अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन सोशल मीडिया पर करते हैं। नव पूँजीवाद के कारण जो नये किस्म का यथार्थ आया है। उसने समाज को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। बाजारवाद ने मनुष्य को लगातार संवेदनहीन बनाया है। नये अर्थतंत्र के अन्तर्गत जिस तरह बाजारवाद ने देह-व्यापार और अपराध जगत को बढ़ाया है उसके उदाहरण के

लिए प्रदीप सौरभ का 'मुन्नी मोबाइल' तथा चित्रा मुद्गल का 'आवां' उपन्यास उल्लेखनीय है।

इस प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य साहित्य के माध्यम से विश्लेषित किए गये बाजारवाद का विरुद्ध नयी संवेदना के अन्तर्गत मानवीय संवेदनाओं के विविध रूपों पर प्रकाश डालना है। इसके लिए मैंने 'मुन्नी मोबाइल' और 'आवां' उपन्यास का चयन किया है। इस उपन्यासों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज को इस बढ़ते हुए क्रूर बाजारवाद और उसका मानवीय जीवन पर होने वाले प्रभाव के प्रति जागरूक करना तथा इस उत्तर आधुनिक संकल्पना के प्रति विस्तार साहित्य के परिप्रेक्ष्य करना आवश्यक है।

आज भूमण्डलीकरण के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सारा विश्व बाजार के रूप में परिवर्तित हो गया है। बाजारवाद का प्रभाव साहित्य, समाज, सिनेमा आदि प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। भूमण्डलीकरण के साथ इस बाजारवाद की शुरुआत होती है उसका मतलब होता है - उपभोक्ता संस्कृति का प्रसार और इसके लिए विकासशील देशों और पिछड़े देशों में ऐसा अर्थतंत्र विकसित होता है जिससे बाजार में पूँजीवादी देशों की वस्तुएँ निर्बाध रूप से आने लगती है। अपितु मनुष्य को भी एक उपभोग की तरह माना जाता है।

उपभोक्तावाद को भूमण्डलीकरण के कारण निश्चय ही बढ़ावा मिल रहा है। पूँजीवाद में उपभोक्ता वस्तुओं का अनियंत्रित उत्पादन होता है। उसके लिए बाजार का विस्तार होता है और इस क्रूरभोग वृत्ति का प्राथमिक शिकार स्त्रियाँ बन चुकी हैं। स्त्रियों को एक वस्तु उपभोग की तरह देखा जाता है और उसकी बाजार में बोली लगाई जाती है। कई स्त्रियाँ न चाहते हुए इस स्त्री प्रवृत्ति बाजार का शिकार बनती है तथा तकनीकी के उन्नति के कारण भारत में जिस गर्भ को पवित्र माना जाता है। उस गर्भ की भी बाजार में कीमत लगाई जाती है। कई स्त्रियों को पूँजी के लोभ में तथा गरीबी के कारण अपनी देह बेचकर बाजारवाद के आग में झोंक दिया जाता है।

आधुनिक दुनिया में उपभोगी नारीवाद सर्वव्यापी इस बाजारवाद ने मनुष्य का इतना आकर्षित किया है कि वह अपने अंग-प्रत्यंग का प्रदर्शन सोशियल मीडिया पर करते है। नव पूँजीवाद के कारण जो नये किस्म का यथार्थ आया है, उसने समाज को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। बाजारवाद ने मनुष्य को लगातार संवेदनहीन बनाया है। नये अर्थ तंत्र के अंतर्गत जिस तरह बाजारवाद ने देह व्यापार और अपराध जगत को बढ़ाया है, उसके उदाहरण है। सौरभ का 'मुन्नी मोबाइल' तथा चित्रा मुद्गल का उपन्यास उल्लेखनीय है। इन उपन्यासों में नये अन्तर्गत विविध रूपों को विश्लेषित किया है।

'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में पत्रकार एक प्रमुख पात्र है जो अपनी पैनी, निर्भीक और देश समाज में घटित घटनाओं को शब्दबद्ध करता है के केंद्र में मुन्नी मोबाइल की कथा है, जो आनन्द झाड़ू-पोंछा करती है और जिसे आनन्द भारती सिखलाता है। मुन्नी मोबाइल का असली नाम बिहार के बक्सर जिसे से आकर दिल्ली के गाँव में रहती है। पहले झोपड़ी में रहने वाली खरीदकर मकान बनाती है और अपने छह बच्चों पति को पालती-पोसती है। लेकिन बाजारवाद पड़कर वह गैरकानूनी धंधे शुरू करती है और इसी कारण उसकी अन्त में हत्या कर दी जाती है।

लोभी वृत्ति को बढ़ावा देना -

'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में मुन्नी मोबाइल वृत्त इस कदर बढ़ जाती है कि झोपड़ी में रहने वाली खरीदकर मकान बनाती है। स्वेटर बुनकर कुछ कमा है, तो कभी चोरी छिपे और नाजायज तरीके से गर्भवती वाली झोला-छाप महिला डॉक्टर के यहाँ हाथ बटाती लिए केस लाती है और बदले में कमीशन लेती है वह गैर कानूनी तरीके से पैसे कमाती था।

आर्थिक समृद्धि की लालसा -

मुन्नी आनन्द भारती से दिवाली गिफ्ट मोबाइल माँगती है और यही से मुन्नी के जीवन का प्रारम्भ हो जाता है। मोबाइल उसके जीवन में आते वह मोबाइल के सहारे घरेलू बाइयों का अघोषित लगती है। लोगों के नम्बर उसके दिमाग में सेव बसों की मालकिन बन जाती है और चौधराइन को है।

अहं की भावना -

अहं की प्रवृत्ति मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। किसी में अधिक, किसी में कम किसी में होती अवश्य है। मोबाइल के कारण और तेजी से बढ़ने लगा। जिसके कारण बाजार हैसियत और स्तर और ऊँचा हो गया। अब मुन्नी में उपयोगितावाद को समझ गयी थी और उसे होते हुए भी पढ़े-लिखे लोगों से भी ज्यादा

घमण्ड बना हुआ था जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस प्रसंग में दृष्टिगत होता है। वह आनन्द भारती से कहती है- 'आपने पढ़कर क्या कर लिया। आप तो वहाँ पड़े जहाँ नेहरू जी पड़े थे। न अपना घर चलाया न बच्चे पाले। न अपनी लुगाई रख पाए, न अपनी माँ-बाप की इज्जत कर पाए। ..... मैं निपढ़ हूँ पढ़ी लिखी नहीं हूँ। आपकी सेवा में रहती हूँ। पूरा कुनबा पाल रही हूँ।" यहाँ मुन्नी का स्वार्थ और अहंकार दिखाई देता है।

प्रेम में व्यवहारिकता -

बाजारवाद के कारण धंधे के दौरान मुन्नी के गाजियाबाद के गैंगस्टर पलटू से रिश्ते हो गये थे, जो उसका आशिक बना। उसकी और उसकी लड़कियों की वही रक्षा करता था। इससे प्रतीत होता है कि बाजारवाद के कारण प्रेम में व्यवहारिकता आ गयी है।

रिश्तों की टूटन -

इस उपन्यास में बाजारवाद रिश्तों में कड़ुवाहट की भावना लाता है यह भी देखने के लिए मिलता है। सामाजिक जातिवाद के कारण आनन्द भारती अपनी प्रेमिका मानसी से विवाह नहींकर पाते। शिवानी से शादी करने के बाद भी वे अपना प्यार उसे नहीं दे पाते इस वजह से उन दिनों में अनबन होती रहती है जिसका अन्त तलाक से होता है।

क्रोध की अतिशयता -

बाजारवाद मनुष्य को इतना प्रभावित करता है कि वे अपनों को ही मारने में पीछे नहीं हटते। कॉल गर्ल वर्ल्ड की स्टॉन रीतिका ठाकुर को उसका पति विजय गुप्ता धंधा छोड़कर गृहस्थी बसाने की बात करती है और अपना नोएडा का फ्लैट उसके नाम पर करता है। तब रीतिका ठाकुर अपने दूसरे चाहने वालों से कहकर उसकी हत्या कर लाश ठिकाने लगाती है।

अश्लीलता का विद्रूप रूप -

बाजारवाद ने काम-वासना को ज्यादा आकर्षित किया है। आनन्द भारती लंदन में अपने मित्र राजेश जोशी के साथ पब में जाते हैं तब वे एक जोड़े को नजर भरकर देखते हैं। लड़का लड़की नशे में चूर-चूर थे। लड़के ने लड़की की टी शर्ट के बटन खोल रखे थे, वह लड़की की छाती में बियर पीते-पीते हाथ घुमा देता था। लड़की ने भी लड़के के जीन्स के अन्दर हाथ डाल रखा था।" इस प्रकार से इस उपन्यास में अश्लीलता का व्यापक चित्रण हुआ है।

प्रतियोगिता की अंधी दौड़ -

मुन्नी बाजारवाद की सीढ़ियाँ बिना किसी रुकावट से चढ़ने लगी थी। बाजार के हर तरह के दाँव-पेच में वह माहिर होने लगती है। स्थानीय ठेकेदारों, पुलिस थानों से लड़ती-झगड़ती है, बसों की मालकिन और चौधराइन की संज्ञा पाती है। मुन्नी मोबाइल का कॉल गर्ल रैकेट का धंधा अच्छा चल रहा था। कॉल गर्ल वर्ल्ड के एक-एक गैंग के बहुत सारे कस्टमर मुन्नी के कस्टमर हो गये थे। मुन्नी मोबाइल की धंधे में होती तरक्की को देखकर बाकी गैंगस्टरों ने सुपारी देकर उसकी हत्या की गई। मुन्नी मोबाइल का अन्त होने के बाद भी इस उपभोग नारीवाद का अन्त नहीं हुआ। बाजारवाद के इस धंधे के मुनाफे की तेज तर्रार बेटी रेखा इतनी प्रभावित हो गई कि मुन्नी के बाद उसी के आशिक पलटू के साथ वह सम्बन्ध रखती है। वह रेखा चितकबरी बनकर अपनी कम्प्यूटर कुशलता से सेक्स रैकेट का विस्तार करने में जुटी रहती है।

पूरे विश्व में बाजारवाद और उपभोक्तावाद का जो माया जाल रचा उसकी गिरफ्त में विकासशील देशों का सामान्य जन मानस विशेषकर मध्यवर्ग इतनी बुरी तरह पिस रहा है कि यह एक चिंता का विषय बन गया है। एक प्रकार से यह बाजारवाद और उपभोक्तावाद का प्रतिरोधी स्वर है, जो स्थितियों का चित्रण कर उनके प्रति नकारात्मक रुख अख्तियार करते हुए उपन्यासों के पात्रों की इस रूप में प्रस्तुति की गई है कि उस सबके प्रति वितृष्णा का भाव जगे। हिन्दी में चर्चित उपन्यास 'आवां' में बाजारवाद की स्थितियों को विश्लेषित किया है। जिसमें सामान्य मनुष्य बाजार की शक्तियों का दास बनकर रह गया है।

'आवां' उपन्यास में महानगरीय जीवन में निम्न मध्य वर्गीय महिलाओं का आर्थिक दुर्दशा और यौन शोषण का चित्रण किया है। अंकिता पांडे 'कामगार आघाड़ी' मजदूर नेता देवी शंकर पांडे की बेटी है। श्रमिक आवश्यकता का जनक है। बाजार में वस्तु से ज्यादा ब्रांड का महत्व हो गया है। 'आवां' उपन्यास में गौतमी नमिता को समझाती है, कि 'ग्राहक क्या खरीदना चाहते हैं, बल्कि उनका उद्देश्य यह है कि वे क्या बेचना चाह रहे हैं। उसके माध्यम से वे अपने आभूषणों को इस प्रकार प्रस्तुत करेंगे कि ग्राहक स्वयं उन्हें पाने के लिए ललक जाए।"

कामुकता की भावना -

स्त्री को समाज उपभोग की वस्तु समझता है। अपितु स्त्री अपने अधिकारों को समझने लगती है, परन्तु बाजार उसे आर्थिक समृध्दि का भ्रम देकर 'शरीर' के रूप में ही प्रस्तुत कर रहा है। 'आवां' उपन्यास में सिद्धार्थ नमिता को कहता है- 'देखो, पोर्टफोलियो मैं तुम्हारा करवा दूँगा। फीस की शक्ल भी

बदल जाएगी। अन्यथा न लेना। मैं बेहद स्पष्टवादी, ईमानदार, पेशेवर रवैये का व्यक्ति हूँ। तुम्हें लक्ष्य तक पहुंचाने में कोई कोर कसर नहीं रखूँगा। लेकिन प्रत्येक अनुबन्ध में साठ प्रतिशत मेरा चालीस प्रतिशत तुम्हारा। पोर्टफोलियो बनाने के एवज में तुम्हें मेरे साथ दैहिक सम्बन्ध रखने होंगे। हिसाब बराबर।" बाजारवाद के कारण काम-वासना इस हद तक बढ़ गयी है कि इंसान हर काम के साथ अपना फायदा ही देखता है।

मोहभंग की स्थिति -

पहले लोगों को मार-पीट कर गुलाम बनाया जाता था, लेकिन समकालीन दौर में पैसे और भोग का लालच देकर गुलाम बनाया जा रहा है। बाजारीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण में स्त्री की इसी अंधी दौड़ को दर्शाने वाला महत्वपूर्ण उपन्यास आवां में नमिता पाण्डेय विश्व पूंजी बाजार की इस चकाचौंध में बिकने के लिए तैयार हैं। इसके लिए वह नया स्वरूप धारण करने के लिए भी तैयार हैं तथा ग्राहक को उसका यही रूप पसन्द है। सूरत का हीरे का व्यापारी संजय कनोई उसे उसकी कीमत देता है। पूंजी के नरक से उबरने के बाद ही नमिता को इस बात का एहसास होता है कि उसे इस्तेमाल किया जा रहा है। संजय कनोई कहता है - 'जानती हो बाप बनने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया? उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके? उसका जिम्मा सिर्फ इतना भर - था कि वह मेरे पिता बनने में मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए।'[5]

आक्रोश की भावना -

आजकल लोगों में क्रोध की भावना काफी बढ़ गई है। वह बहुत ही जल्दी हिंसक आक्रोश में बदल जाता है। किसी बात पर गुस्सा आया नहींकि तुरन्त निकल आता है। संजय कनोई पचासों औरतों से शारीरिक सम्बन्ध बनाना सहज मानता है, पर नमिता से पवित्र कोख और खून की माँग करता है। यह है - पूँजी का एकाधिकार, जिसके अनुसार वह जो कहे समाज उसे वैसा ही माने। पूँजी की निर्ममता ने नमिता को चुनकर यह साबित कर दिया कि बंबई में ट्रेड यूनियन की बेटी को खरीदा जा सकता है तो सामान्य लड़की का बाजारवाद के दौड़ में क्या औकात है । इस बाजार में पैसे व संपत्ति के बलबूते पर किसी को भी खरीदा जा सकता है, बस खरीदने वाले पर निर्भर करता है कि वह क्या चाहता है। नमिता के विचलित होने पर पूँजी के एकाधिकार के रूप में संजय कनोई चेतावनी देता हुआ कहता है कि 'देखो मेरे बच्चे के संग तुमने आवेश में आकर कोई छेड़छाड़ की... हो जाएगा। जान से जाओगी तुम नेना... एकदम सुशील वर्मा की आत्मा प्रवेश कर... और जब नमिता का गर्भपात होता है तब ... की तरह का व्यवहार करता भी है।

'आवां' उपन्यास की नमिता का ... जो भले ही बाजार के नियमों का शिकार हुई ... परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ने व अपना ... स्थापित करने में सफल भी रही है।

हिन्दी साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों ... का न केवल चित्रण किया है, अपितु ... प्रतिरोधी स्वर कथा संवेदन के स्तर पर उठाया ... हिन्दी उपन्यास में मुख्यतः भूमंडलीकरण ... परिवेश में व्याप्त बाजारवाद और उपभोक्तावाद ... विश्व ग्राम संस्कृति ने हमारे यहाँ जो ... पर उपन्यासकारों ने हर माध्यम से अपनी ... उसका भरपूर विरोध भी अपने-अपने ढंग से ...

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ... हुए क्रूर बाजारवाद और उसका मानवीय ... प्रभाव के प्रति जागरूक करने के लिए तथा ... संकल्पना के अति विस्तार साहित्य के परिप्रेक्ष्य ... है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाइल, पृष्ठ - 76
2- प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबालि, पृष्ठ - 91
3- प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाइल, पृष्ठ - 91
4- चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ - 221
5- चित्रा मुद्गल, आवां पृष्ठ - 293
6- चित्रा मुद्गल, आवां पृष्ठ - 539
7- चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ - 526
8- डॉ. ऊषा यादव - हिन्दी की महिला उपन्यासकार ... संवेदना
9- चित्रा मुद्गल - आवां
10- प्रदीप सौरभ - मुन्नी मोबाइल
11- पुष्पपाल सिंह - भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास
12- रामस्वरूप चतुर्वेदी - हिन्दी साहित्य और संवेदना ...
13- संपादक - अभय कुमार दुबे - भारत का भूमंडलीकरण
14- संपादक - रामशरण जोशी - मीडिया और बाजार...

◆◆